# आनंद तिवारी

| गीतों में मेरे डूबो तो | खूटियों पर टंगे हैं लोग |
|---|---|
| मेरे अंतस में मत झांको<br>आंख तुम्हारी नम होगी<br>गीतों में मेरे डूबो तो<br>पीड़ाएं कुछ कम होंगी<br><br>जीवन तो मृगतृष्णाओं के<br>जंगल जैसा है<br>जैसा तुमने सोचा समझा<br>जीवन वैसा है<br><br>एक चढ़ाई पार करो बस<br>धरती आगे सम होगी<br><br>अंतहीन ऊर्जा बिखरी<br>जो मुझे दीखती है<br>गिर गिरकर फिर फिर मत चढ़ना<br>उम्मीद सीखती है<br><br>लक्ष्य बना कर नहीं चले तो<br>सोच तुम्हारी भ्रम होगी<br><br>नदिया पर्वत काट काट कर<br>आगे बढ़ा करे<br>अपनी ऊंचाई सिर लादे<br>पर्वत डरे डरे<br><br>साथ साथ चलने की इच्छा<br>जीवन का अनुक्रम होगी। | नेकी बदी की<br>गठरी बांधे<br>खंटी–खंटी टंगे हैं लोग<br>किसे क्या बतायें<br>सब अपने<br>रंगों में ही रंगे हैं लोग<br><br>दुनिया लगती है<br>बेमानी<br>आसमान झूठा लगता है<br>अपने सब<br>जब रंग बदलते<br>मीठा दूध मठा लगता है<br><br>तंग गली में<br>दौड़ लगाते<br>देख देख कर ठगे हैं लोग<br><br>कोहरे को<br>परदा मत समझो<br>इसके पीछे क्या कर लोगे<br>नदिया की धारा<br>बहने दो<br>रोकोगे तो खुद भोगेगे<br><br>पुल पर क्या<br>चल पायेंगे ये<br>रेलिंग पर जो टंगे हैं लोग। |
| | सम्पर्क–<br>छोटी खिरहनी<br>पोस्ट साइंस कॉलेज<br>डाकघर कटनी<br>(म.प्र.)–483501 |
| | |